गैस कनेक्शन पाकर खुश हुईं महिलाएं

उज्वला योजना के तहत ग्रामीण महिलाओं को मिला गैस कनेक्शन.

रांची जिले के कांके प्रखंड स्थित सुकुरहुट्टू गांव को धुआंमुक्त गांव बनाने में सरकार सराहनीय भूमिका निभा रही है. कांके प्रखंड का यह बड़ा गांव है. गांव की आबादी 25-30 हजार है. सुकूरहुट्टू गांव में दो पंचायत हैं. घनी आबादी होने के कारण सुबह से शाम तक गांव में कोयला और लकड़ी जलती थी, जिससे गांव में वायु प्रदूषण काफी ज्यादा होता था और गांव धुंधला दिखता था. प्रदूषण के कारण ग्रामीण बीमारियों का शिकार हो रहे थे, लेकिन प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत एक गैस सिलेंडर और एक गैस चूल्हा मिलने से ग्रामीण महिलाएं अब काफी खुश हैं. खास कर गरीब महिलाएं ज्यादा खुश हैं, जो चाह कर भी गैस कनेक्शन नहीं ले सकती थीं. गांव में अब तक 226 गैस कनेक्शन बंट जा चुके हैं. साथ ही जिनके पास गैस कनेक्शन नहीं है, उन्हें आधार कार्ड और फोटो जमा करने के लिए कहा गया है. इस तरीके से यह गांव अब लगभग धुआंमुक्त गांव होने को अग्रसर है. गैस कनेक्शन पाकर वृद्ध महिला फूलो देवी बताती हैं कि गैस कनेक्शन देकर सरकार ने बहुत अच्छा काम किया है. अब लकड़ी और कोयला का इस्तेमाल नहीं करना पड़ेगा, जिससे घर भी साफ रहेगा. इसी तरह सिलेंडर और गैस चूल्हा पाकर रेखा देवी भी काफी खुश हैं. रेखा बताती हैं कि उनके दो छोटे-छोटे बच्चे हैं. पति बेरोजगार हैं. इस कारण लकड़ी और पत्ता जला कर खाना बनाना पड़ता था. इसमें समय भी लगता है, लेकिन अब इससे मुक्ति मिल गयी है. रेखा बताती हैं कि इस तरीके से गांव जल्द पूर्ण रूप से धुआंमुक्त हो जायेगा, गंदगी नहीं होगी और सुकूरहुट्टू गांव स्वच्छता की ओर आगे बढ़ेगा. अब सुकूरहुट्टू गांव में लगभग 90 फीसदी ग्रामीण खाना बनाने के लिए गैस चूल्हा का इस्तेमाल करते हैं. बहुत जल्द यह गांव धुआंमुक्त गांव हो जायेगा. जेएसएलपीएस और महिला समूह से जुड़कर यहां की महिलाएं अब पहले की अपेक्षा ज्यादा जागरूक हो गयी हैं. गांव और मुहल्ले की साफ-सफाई में विशेष ध्यान भी दे रही हैं. ग्रामीणों का मानना है कि आस-पास साफ-सफाई रहने से कई बीमारियों से लोगों को निजात मिलती है. इसलिए स्वच्छता पर ध्यान देना बहुत जरूरी है. साथ ही गांव में अब लोगों को धुएं से मुक्ति मिल रही है.

सुषमा देवी

प्रखंड : कांके
जिला : रांची

ग्रामीण महिलाएं अब काफी आगे निकल चुकी हैं. महिला समूह और जेएसएलपीएस ने महिलाओं की उन बेड़ियों को तोड़ दिया है, जिससे वे सदियों से जकड़ी हुई थीं. अब महिलाएं उन कार्यों को भी बड़ी दक्षता से कर रही हैं, जिन कार्यों में पहले सिर्फ पुरुषों का वर्चस्व था. रानी मिस्त्री इसका एक बेहतर उदाहरण है. समाज और घर से लगातार दबाव मिलने के बाद भी महिलाओं ने हार नहीं मानी और अब शौचालय निर्माण का बखूबी काम कर रही हैं. गांव का किस तरीके से विकास करना है, गांव की अर्थव्यवस्था को कैसे मजबूत करना है, महिलाएं अब इस ओर भी ध्यान देने लगी हैं. समूह की बैठकों के जरिये महिलाओं को सरकारी योजनाओं की पूरी जानकारी मिल रही है, जिसका लाभ महिलाएं उठा रही हैं. महिलाएं अब इतनी सबल हो गयी हैं कि दिव्यांगता को भी मात देकर समाज में अपनी पहचान बना रही हैं.

पशु सखी से लेकर रानी मिस्त्री बनतीं ग्रामीण महिलाएं

अमिता देवी

पंचायत : रनिया
जिला : खूंटी

विकास मेले का किया गया आयोजन

खूंटी जिला अंतर्गत खटंगा पंचायत के गरई गांव को आदर्श ग्राम के रूप में चुना गया है. यह गांव पहले नक्सल प्रभावित था. इस गांव के विकास के लिए प्रखंड द्वारा विकास मेले का आयोजन किया गया. विकास मेले में रनिया प्रखंड के विकास पदाधिकारी, जिला परिषद, प्रखंड प्रमुख, ब्लॉक के कर्मचारी, रनिया बीएमएमयू के कार्यकर्ता समेत सखी मंडल की काफी संख्या में महिलाएं शामिल हुईं. मेले में विभिन्न प्रकार के स्टॉल लगाये गये. जेएसएलपीएस द्वारा मेले में कृषक मित्र, वन मित्र और पशु सखी के भी स्टॉल लगाये गये. कृषक मित्र स्टॉल में उपस्थित कृषक मित्र दीदी ने मेले में आये ग्रामीणों को अजोला कीट, घनजीवामृत, द्रव्यजीवामृत जैसी जैविक खाद और कीटनाशक बनाने की जानकारी दी. साथ ही उसका उपयोग किस प्रकार से किया जाये, इस बारे में विस्तार से जानकारी दी. पशु सखी के स्टॉल में ग्रामीणों को पशुओं के बेहतर रख-रखाव की जानकारी दी गयी. ग्रामीणों को बताया गया कि पशुओं को कैसा आहार देना चाहिए. साथ ही टीकाकरण के बारे में जानकारी दी गयी. वन मित्र के स्टॉल पर वन उपज तसर कैसे प्राप्त करें, इसकी जानकारी दी गयी. तसर के पालन के बारे में भी बताया गया. मेले में लोगों को तसर के कीट दिखाये गये. इस तरह की जानकारी पाकर ग्रामीण काफी खुश दिखे. इन स्टॉल्स के अलावा मेले में ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए कौशल विकास, पशुपालन विभाग, मत्स्य पालन विभाग, स्वास्थ्य विभाग, आयुष्मान भारत योजना, कल्याण गुरुकुल, स्वच्छ भारत मिशन, होटल मैनेजमेंट, मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना और श्रम नियोजन विभाग के स्टॉल लगाये गये थे. इन स्टॉलों पर भी ग्रामीण जानकारी हासिल कर रहे थे. मेले में समूह की महिलाओं के बीच गैस चूल्हे का भी वितरण किया गया. इस दौरान लाभुकों को बैंक द्वारा ट्रैक्टर और मशीन लोन पर दिया गया.

विकास मेले में स्टॉल लगाये समूह की दीदियां.

सामूहिक खेती का लाभ उठा रहीं महिलाएं

सब्जी का बिचड़ा लगातीं सखी मंडल की सदस्य.

देवघर जिला के पालोजोरी प्रखंड से लगभग सात किलोमीटर दूर स्थित है भौराडीह गांव. यहां गुलाब फूल आजीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाएं सामूहिक खेती कर रही हैं. महिलाओं ने सामूहिक रूप से टमाटर, मिर्ची, फूलगोभी, भिंडी, सेम, बैगन, मकई, आलू आदि की खेती कर रही हैं. खेत से तैयार सब्जी को रोजाना बाजार में बेच कर अपने रोज का खर्चा चला रही हैं. सखी मंडल से जुड़ी जिन महिलाओं के पास खेत नहीं है या अकेले करने में सक्षम नहीं है, अब वो महिलाएं समूह से कर्ज लेकर सामूहिक रूप से खेती करके अपनी आजीविका चला रही हैं. समूह से जुड़ने के बाद कुछ महिलाओं ने मिल कर खेती करने की बात जब समूह में रखी, तो सभी महिलाएं तैयार हो गयीं. सबसे पहले समूह से 2500 रुपये लोन लेकर महिलाएं एक एकड़ जमीन लीज पर लीं. इसमें श्रीविधि से धान लगाने के साथ-साथ हरी सब्जियों की खेती की, ताकि सब्जी बेच कर रोजाना के खर्च निकाल सकें. समूह की सदस्य गुड़िया देवी बताती हैं कि जब महिलाएं समूह से नहीं जुड़ी थीं, उस वक्त महिलाएं अकेला खेती करती थीं. इससे अधिक फायदा नहीं होता था, लेकिन अब सभी मिल कर सामूहिक खेती कर रही हैं. इससे मुनाफा भी हो रहा है और मेहनत भी कम लग रहा है. समूह से जुड़ कर सामूहिक खेती करनेवाली महिलाओं को सरकार की ओर से 90 प्रतिशत सब्सिडी पर पावर टिलर, पंप सेट और डीप बोरिंग की सुविधा मिली है, ताकि महिलाओं को खेती करने में कोई असुविधा नहीं हो. महिलाएं पंप सेट के जरिये तालाब या कुआं से फसल की सिंचाई कर लेती हैं, जिससे इन्हें लागत कम आती है. सामूहिक खेती करते हुए पिछले साल महिलाओं को आलू में 22 हजार रुपये का फायदा हुआ था. समूह से जुड़ी हर महिला महीने में एक से डेढ़ हजार रुपये की कमाई सब्जी से कर लेती हैं. खेती से लाभ मिलने के बाद अब वे धान की खरीद-बिक्री का भी काम करने लगी हैं, जिससे इन्हें और फायदा हो रहा है.

नेहा कुमारी

प्रखंड : पालोजोरी
जिला : देवघर

बकरी पालन से जेमा बनीं आत्मनिर्भर

जयंती गगराई

प्रखंड : हाटगम्हरिया
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिले के हाटगम्हरिया प्रखंड अंतर्गत बड़मिता गांव की जेमा गगराई की आर्थिक स्थिति अब काफी मजबूत हो गयी है. जेमा अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा भी दिला रही हैं, लेकिन पहले जेमा की स्थिति अच्छी नहीं थी. पति महीने में 14-15 दिन ही काम कर पाते थे, जिससे घर चलाना काफी मुश्किल होता था. इस बीच जेमा को महिला समूह की जानकारी मिली. जानकारी मिलने के बाद जेमा साल 2016 में चातोम्ब उम्बूल महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़ गयीं. समूह से जुड़ कर व छोटे-मोटे लोन लेकर परिवार का खर्च चलाने लगीं. कम पढ़ी-लिखी होने के कारण जेमा ने बकरी और मुर्गी पालन करने का मन बनाया. इसके लिए समूह से 15 हजार रुपये लोन लेकर बकरी और मुर्गी पालन करने लगीं. धीरे-धीरे बकरियों की संख्या बढ़ी और आज उनके पास पांच बकरियां हैं. बकरियों को बेचकर वो पैसे जमा कर रही हैं. जेमा बताती हैं कि पहले वो बकरियों को बेच कर अपनी जरूरतों को पूरा करेंगी, फिर लोन चुकायेंगी. आर्थिक स्थिति सुधरने के बाद जेमा ने अपने बच्चों की पढ़ाई पर भी ध्यान देना शुरू किया है. जेमा अब समूह से 20 हजार रुपये लेकर बागवानी शुरू करना चाहती हैं, ताकि उसकी आमदनी और बढ़ सके.

ग्रामीणों के लिए आदर्श बनीं रिया

पलामू जिले के लेस्लीगंज की रिया शर्मा ग्रामीण महिलाओं के लिए मिसाल बन गयी हैं. रिया एक पैर से दिव्यांग हैं, जिसके कारण वो इंटर तक ही पढ़ायी कर पायीं, पर रिया ने अपनी सफलता से यह साबित कर दिया है कि नामुमकिन कुछ भी नहीं है. वर्ष 2011 में रिया की शादी कांडीह गांव के सुंडीपुर गांव में हुई थी. पति शहर में किसी कंपनी में काम करते थे. दिव्यांग होने के कारण ससुराल वाले उन्हें प्रताड़ित करते थे. इससे परेशान होकर रिया अपने मायके वापस आ गयीं. अपने मायके में रिया अपने बलबूते कुछ करना चाहती थीं. रिया ने अपनी मां के सहारे समूह से 75 हजार रुपये का लोन लिया. रिया की मां दुर्गा आजीविका सखी मंडल से जुड़ी हुई हैं, इस कारण कम ब्याज दर पर रिया को लोन मिल गया. रिया ने अपनी मां, चाची और भाई की मदद से एक सिलाई की दुकान खोलीं. महज छह महीने में ही रिया ने अपनी विशेष पहचान बना ली. लोग रिया के बनाये हुए डिजाइनर कपड़े को खूब पसंद कर रहे हैं. सामान लाने में दिक्कत होने के कारण रिया ने समूह से दोबारा 26 हजार रुपये का लोन लिया और खुद का पैसा मिला कर एक स्कूटी खरीदीं. अब उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी हो गयी है.

नयनतारा कुमारी

प्रखंड : मेदिनीनगर
जिला : पलामू

पशुओं को जीवन दान दे रही हैं पशु सखी

गिरिडीह जिले के नौपाडीह गांव की सोनी देवी प्रशिक्षण पाकर पशु सखी बन गयी हैं. सोनी देवी साईं बाबा स्वयं सहायता समूह की बुक कीपर हैं और दस समूह के बीच पशु सखी हैं, जो बकरियों के खान-पान से लेकर टीकाकरण का पूरा ध्यान रखती हैं. सोनी बताती हैं कि शादी होने के बाद पढ़ाई छूट गयी. कम पढ़ी-लिखी होने के कारण नौकरी मिलना संभव नहीं था, लेकिन पशु सखी से आज अच्छी आमदनी हो रही है. इससे बच्चों को बेहतर शिक्षा दे पाने में सक्षम हो रही हैं. बता दें कि सोनी देवी की तरह राज्य में चार हजार से अधिक पशु सखी काम कर रही हैं. जेएसएलपीएस के सहयोग से राज्य में 58,990 किसानों ने बकरी पालन शुरू किया है. जेएसएलपीएस द्वारा सखी मंडल से जुड़ी सुदूर गांव की ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें पशु सखी बनाया जा रहा है. ये महिलाएं गांव-गांव जाकर बकरियों का इलाज कर रही हैं. इससे बकरियों की मृत्यु दर में काफी कमी आयी है.

खुशबू कुमारी

प्रखंड : जमुआ
जिला : गिरिडीह

शौचालय निर्माण का जिम्मा संभाल रहीं सखी मंडल की सदस्य

झारखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के तहत बन रहे शौचालयों के निर्माण का जिम्मा अब ग्राम संगठन की महिलाएं संभाल रही हैं. ये महिलाएं न केवल शौचालय निर्माण का कार्य कर रही हैं, बल्कि हर समूह की बैठक में महिलाओं को शौचालय के इस्तेमाल के लिए जागरूक भी कर रही हैं. बोकारो जिला मुख्यालय से करीब 32 किलोमीटर की दूरी पर है चन्दनकियारी. इस क्षेत्र की सखी मंडल की सदस्य आज शौचालय निर्माण में जुटी हैं. ग्राम संगठन की अध्यक्ष पाणीपति राय बताती हैं कि वो सिर्फ शौचालय निर्माण ही नहीं करवातीं, बल्कि उसकी रंगाई-पुताई का भी जिम्मा लेती हैं. पाणीपति राय कहती हैं कि शौचालय बनाने में अच्छी गुणवत्ता की ईंट, बालू, सीमेंट, छड़ और गिट्टी का इस्तेमाल करती हैं. शौचालय बनाने के बाद ही हमारा काम पूरा नहीं होता. हम उसकी रंगाई करने के लिए भी प्रेरित करते हैं और इसके इस्तेमाल के फायदे भी बताते हैं. ग्राम संगठन की सचिव कल्याणी देवी बताती हैं कि जबसे शौचालय निर्माण कार्य का जिम्मा महिलाओं ने लिया है, उन्हें पता चल गया है कि एक शौचालय बनाने में कितनी लागत आती है. इससे उन्हें काफी फायदा हो रहा है. इससे उन्हें अच्छी आमदनी भी हो रही है. इससे घर चलाने में आसानी हो रही है.

अंजू गोराई

प्रखंड : चंदनकियारी
जिला : बोकारो

एसवीइपी से स्वावलंबी बनतीं महिलाएं

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर पंचायत के इंदरा गांव में सखी मंडल से जुड़ कर ग्रामीण महिलाएं अपनी आजीविका बढ़ा रही हैं. गांव में कोयना स्वयं सहायता समूह है, जिससे गांव की 12 महिलाएं जुड़ी हुई हैं. समूह की सदस्य गायत्री देवी और मालती जोजोवर समूह से जुड़ कर अपनी जिंदगी में बदलाव ला रही हैं. गायत्री देवी ने समूह से अपने बच्चों की शिक्षा के लिए छोटा लोन लिया और उसे समय से चुकाने के बाद फिर से 10 हजार रुपये का लोन लेकर शौचालय बनवाया है. गायत्री देवी कहती हैं कि उनकी बेटी दसवीं कक्षा में पढ़ती है. शौच के लिए बाहर कहां जायेगी, इसलिए लोन लेकर शौचालय बनवा दिया. गायत्री देवी और मालती जोजोवर के पति काम तो करते हैं, पर इससे घर चलाने के लिए पैसे कम पड़ जाते हैं. इसलिए वह एसवीइपी के माध्यम से एक लाख रुपये का लोन लेकर स्टेशनरी दुकान खोली हैं. दुकान अच्छी जगह पर है. इससे महीने में 10 हजार रुपये तक की कमाई हो जाती है. इस आमदनी में से पांच हजार रुपये से लोन चुकाया जाता है और बाकी बचे पांच हजार रुपये गायत्री और मालती दोनों आपस में बांट लेती हैं. इन रुपयों का उपयोग वे अपने बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ घर के अन्य काम में करती हैं. मालती बताती हैं कि दुकान खोलने के बाद अब आर्थिक परेशानी थोड़ी कम हुई है. दोनों की इच्छा है कि जल्द ही इससे और बड़ी दुकान की जाये.

आशा तिग्गा

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम